Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)
(*Peer Reviewed Hindi Journal*)

ISSN 2454-2695
Vol 9 Issue 08
August 2023

''आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन''

मनोज कुमार यादव
शोधार्थी, बरकतउल्लाह विष्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. सरोज जैन
प्राचार्य, विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजूकेषन, भोपाल

इस अध्ययन के द्वारा भोपाल के आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। दो अलग–अलग पाठ्यक्रम के 20-20(40) विद्यार्थियों का प्रतिदर्ष लिया गया। जिन पर *डा.एच.एस. अस्थाना* द्वारा निर्मित एडजस्टमेन्ट इन्वेन्टरी का उपयोग किया गया। इस इन्वेन्टरी का उपयोग करके समंक एकत्रित किया गया। समंक विष्लेषण हेतु सांख्यिकी तकनीक जैसे– माध्य, मानक विचलन तथा t-test लगााया गया। समंक विष्लेषण के बाद परिणाम प्राप्त हुआ। परिणाम यह था कि आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तावना

बालक का सतत जीवन पर्यन्त विकास होता है। बालक के विकास में कई तत्वों का समावेष होता है तथा ये तत्व बालक को प्रभावित भी करते हैं। अपने उद्देष्यों को प्राप्त करने के लिए वातावरण के अनुकूल हो जाना, भी व्यक्तित्व का एक गुण है। समायोजन, बालक अपनी मानसिक–षारीरिक योग्यता एवं क्षमता के अनुसार करता हैं। समायोजन को समन्वयपूर्ण स्थिति भी कहा जाता है क्योंकि बालक, परिस्थिति तथा वातावरण में स्वयं को समायोजित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। समायोजन का अर्थ यह भी है कि जो व्यक्ति वातावरण एवं परिस्थितियों के अनुसार आचरण करे, समाज के अन्य अनुसार व्यवहार करे, नीडर, समस्या का समाधान करे तथा सामाजिक मूल्यों के अनुरूप हो।

''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है,जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित संबन्ध रखने के लिए अपने व्यव्हार में परिवर्तन करता है।''

गेट्स व अन्य

शोध की आवश्यकता

वर्तमान समय में बहुत ही परिवर्तनीय है, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति मषीन बन गया है। ऐसी परिस्थिति का प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। विद्यार्थी विभिन्न वातावरण से आते हैं। ऐसे में यह समस्या होती है कि वे स्वयं को किस प्रकार षैक्षिक वातावरण के अनुरूप बनाएं। आज के समय में विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता होना आवष्यक है। जिससे वे एक अच्छा वातावरण प्राप्त कर सकें। अतः यह षोध

Received on 9 August 2023
Revised on 21 August 2023
Published on 30 August. 2023

ISSN 2454-2695
Vol 9 Issue 08
August 2023

आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य किया गया ।

अध्ययन का उद्देश्य

आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन स्तर ज्ञात करना।

समस्या कथन

आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

परिकल्पना

आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

अध्ययन की सीमांकन

1. इस अध्ययन हेतु आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया हैं।
2. इस अध्ययन हेतु 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया।
3. भोपाल जिले के आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यालयों का चयन किया गया है।

शोध विधि

इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में प्रदत्तों की संकलन विधि में समायोजन क्षमता के अध्ययन हेतु ***डा.एच.एस. अस्थाना*** द्वारा निर्मित **एडजस्टमेन्ट इन्वेन्टरी** की सहायता ली गई है। यह हिन्दी भाषा में है और इसमें 42 प्रष्न हाँ या नहीं प्रकार के है।

प्रतिदर्श

क्र.	विद्यालय	विद्यार्थी
1	आवासीय विद्यालय के विद्यार्थी	20
2	गैर–आवासीय विद्यालय के विद्यार्थी	20
	योग	**40**

संख्यिकीय विष्लेषण

आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यालयों विद्यर्थियों के मध्य समायोजन स्तर

क्र.	तुलनात्मक समूह	मध्यमान	मानक विचलन	T-test
1.	आवासीय विद्यालय के विद्यार्थी	27.0667	5.47	2.274
2.	गैर–आवासीय विद्यालय के विद्यार्थी	21.6667	7.39	2.274

Received on 9 August 2023
Revised on 21 August 2023
Published on 30 August. 2023

ISSN 2454-2695
Vol 9 Issue 08
August 2023

परिणाम

आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 27.0667 हैं तथा मानक विचलन 5.47 है। गैर–आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 21.6667 तथा मानक विचलन 7.39 हैं तथा डी.एफ. 28 हैं तथा टी.मान 2.274 हैं। जो 1.98 स्तर पर T मान 2.274 से कम हैं इसलिए यह परिकल्पना सार्थक हैं।

निष्कर्ष

उपयुक्त सारणी से स्पष्ट है कि– आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थी, दोनो ही समूहों के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

सुझाव

प्राप्त निष्कर्षो के आधार निम्नलिखित सुझाव व्यक्त किए जा सकते हैंः–

1. इस विषय पर राष्ट्रीय स्तर पर अन्य अनुसंधान किए जा सकते हैं एवं व्यापक का सामान्य रूप से उचित परिणाम प्राप्त किए जा सकता है।
2. महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
3. विद्यार्थियों के में समायोजन को पूर्णतः समझने के लिए अन्य चरों को भी अध्ध्यन में जोड़ा जा सकता है।
4. बौद्धिक क्षमता, योग्ताएं, अध्ययन की अभिवृत्ति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक आकांक्षा, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, व्यवहार और सांस्कृतिक–षैक्षिक रूचि आदि क्षेत्रों में कार्य किया जा सकता हैं।
5. अन्य जिलों/प्रांतों से और अधिक संख्या में समंक प्राप्त कर विद्यालयों में अध्ययन को व्यापक आधार दिया जा सकता है।

संदर्भ

नबी अहमद व रहीम अब्दुल (2003), "Study on Intelligence, Socio Economic status and adjustment as correlated of academic achievement". Unpublished MPhil. Dissertation, 2003, Madurai Kamaraj University.

अरिवलन टी. व मोलेष्वरन्, वारवथी, .(2014), उच्च्तर माध्यमिक स्तर पर किषोरावस्था के छात्रों का षैक्षिक समायोजन, Education for All, A peer reviewed Journal, APH Pub., Vol III, Page 06.

कृष्नवेनी, हेमलता (2004), ''कुछ चयनित आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के उच्च माध्यमिक के बच्चों में शैक्षणिक समायोजन'' Unpublished M.Ed. Dissertation, S.V. University, Tirupati.

नरसिम्हा कल्याण एस.(2003), ''आंध्र प्रदेश के आदिवासी कल्याण आवासीय विद्यालयों के VIII, IX और X कक्षा के जनजातीय छात्रों की समायोजन समस्या,'' , I.T.D.A. Srisailam Project, Unpublished M.Ed. dissertation, S.V. University, Tirupati.

यादव व **इकबाल (2009),** Impact of Life skill training on Self esteem, Adjustment and Empathy among Adolescents. Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, 35, 61-70.

Received on 9 August 2023
Revised on 21 August 2023
Published on 30 August. 2023